

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि के सन्दर्भ में अध्ययन

शोध निर्देशक

प्रो० शैलजा गुप्ता

विभागाध्यक्ष

शिक्षक शिक्षा विभाग

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उई, जिला-जालौन (उ०प्र०)

शोधार्थी

अनिल कुमार

(शिक्षाशास्त्र)

प्रस्तावना-

शिक्षा का अर्थ केवल साक्षर होना नहीं है बल्कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ है बालक को प्रशिक्षण देना है शिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध किया जाना चाहिये आज के समय शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य छात्रों को मात्र परीक्षा पास कराना है जिससे छात्रों का विकास नहीं हो पाता है किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है, मानव द्वारा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाता है शिक्षा के द्वारा मानव को सही ज्ञान प्रदान किया जाता है कि संसाधनों का उपयोग किस प्रकार, समय पर करना है और कोन सा संसाधन किस कार्य के लिये उपयोगी है एक शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार, समाज और देश को गौरावित करता है।

उत्तर प्रदेश राज्य में विभिन्न प्रकार की जातियाँ निवास करती है। उन्हीं में से एक है सहरिया यह जनजाति आदिवासी की श्रेणी में आती है और अनुसूचित जाति का दर्जा प्राप्त है। सहरिया कोलरियन परिवार की जनजाति है। फारसी भाषा में सहर का अर्थ है जंगल। चूंकि यह लोग जंगलों में निवस करते हैं इसलिए इन्हें सहरिया जनजाति कहा जाता है। सहरिया पुरुष धोती, रंगीन कमीज और साफा पहनते हैं जबकि महिलाएं लहंगा, घाघरा, सलूका पहनते हैं। सहरिया जनजाति के लोग शारीरिक स्वच्छता पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं। सहरिया जनजाति समतल मैदान में समूह में रहते हैं। इसकी बसाहट एक विशेष प्रकार की होती है, जिसे सहराना कहा जाता है। सहरिया जनजाति में पारिवारिक इकाई कुटुम्ब कहलाती है। सहरिया जनजाति की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, मजदूरी, वन उपज, संग्रह है। यह लोग जड़ी बूटी की पहचान करने में निपुण होते हैं। सहरिया जनजाति का धर्म में अटूट विश्वास होता है। इनमें हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा व्यापक रूप से की जाती है। सहरिया जनजाति के लोग हिन्दू पर्व, होली, दीपावली, दशहरा प्रमुख रूप से मनाते हैं। यह जनजाति जादू-टोना, भूतप्रेत आत्मा में विश्वास करती है। सहरियाओं की अपनी कला और संस्कृति के लिए विशिष्ट पहचान है। इनमें गीत कथाएँ पहेलियाँ और कहावते लोक संस्कृति की परिचायक है। इस जनजाति में कम मात्रा में बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं क्योंकि इस जाति में लोग कम पढ़े लिखे होते हैं और इस जाति का निवास निश्चित नहीं होता है। यह खानबदोश की तरह अपना जीवन व्यतीत करते है। इसी कारण इनके बच्चों को नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाती है। सरकार लगातार प्रयास कर रही है और अनेक छात्रावास उपलब्ध करा रही है कि सहरिया जनजातीय छात्र इनमें रहकर शिक्षा प्राप्त कर सके और अपना, समाज का विकास कर सके और विकास की मुख्य धारा में शामिल हो सके। सरकार ने सहरिया जनजाति के लिए आदिम जाति कल्याण विभाग की स्थापना की है जिसका मुख्य उद्देश्य आदिवासी जनजाति लोगों की शिक्षा सुरक्षा रोजगार सामाजिक विकास की दिशा में कार्य करना है।

समस्या की उत्पत्ति-

किसी भी समाज राज्य देश की प्रगति का आधार शिक्षा होती है और सरकार का प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक बालक/बालिका को शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा को अधिकार अधिनियम 2010 के अनुसार प्रत्येक छात्र/छात्रा अनिवार्य निशुल्क शिक्षा और मिड-डे-मील, डेप्स, शिक्षण सामग्री और अन्य चीजें उपलब्ध कराना है। यदि छात्र को शिक्षा की आवश्यक चीजें प्राप्त नहीं होती है तो वह शिक्षा से दूर हो जाता है।

व्यक्ति और समाज देश को विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में चेतना जागरूकता आती है। शिक्षा ही एकमात्र साधन है जिसके द्वारा सभी छात्र/छात्राओं को नवीन ज्ञान से जोड़कर सफल बनाया जा सकता है। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह अपने सभी छात्रों को समानान्तर से शिक्षित करे और सही मार्गदर्शन देकर उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाये। हमारे देश को स्वतन्त्र हुए 75 साल हो गये हैं और भारत सरकार द्वारा प्रत्येक नागरिकों को शिक्षा प्रदान करने के लिए अनेक आयोग समितियों का गठन किया गया है और सरकार अनेक योजनायें शिक्षा में विकास के लिए निरंतर चला रही है परन्तु क्या कारण है कि आज के समय में भी सहरिया जनजाति के लोग कम मात्रा में शिक्षित हैं। सहरिया जनजाति सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े है और जीवन स्तर में प्राचीन परम्पराओं आदिम प्रवृत्ति विद्यमान है। शैक्षिक स्वास्थ्य, आवास का पूर्णतः अभाव है। इस जनजाति के लोग खानाबदोश जीवन व्यतीत करते हैं। सहरिया जनजाति में अपनी निजी बोली संस्कृति इतिहास का अभाव है। ये जनजाति प्रायः अपने समुदाय को निम्न जाति का मानकर दूसरे समुदाय से अलग रहना पसंद करते हैं। सहरिया जनजाति के लोगों का मुख्य भोजन ज्वार, मक्का, गेहूँ, बाजरा है। यह जनजाति महुआ को उबालकर खाने के शौकीन होते हैं। यह जनजाति मांस, मछली, मुर्गी, अण्डा या शिकार किये जानवर का मांस भी खाते हैं। धूम्रपान के लिए बीड़ी का प्रयोग करते हैं। प्राकृतिक रूप से प्राप्त कंदमूल फल हरी पत्ती खाने का सहरिया जनजाति का सबसे प्रिय शौक है। वनस्पति का ज्ञान प्रत्येक सहरिया को विरासत में मिला है। सहरिया जनजाति के लोगों का जीवन अत्यन्त साधारण है और भौतिक साधनों का आभाव है। सन्तुलित भोजन की कमी और शारीरिक स्वच्छता के अभाव के कारण विभिन्न बीमारियों व रोगों से ग्रस्त रहते हैं। अन्ध विश्वास और जादू-टोना के कारण डॉक्टरी चिकित्सा (इलाज) के अभाव में अकाल मृत्यु भी हो जाती है। वह विकास की मुख्य धारा में शामिल नहीं हो पा रहे हैं। उन्हें रहने के लिए मकान रोजगार शिक्षा के साधन प्राप्त नहीं हो रहे हैं। सरकार सरकारी नौकरी में शिक्षा से आरक्षण प्रदान कर रही है फिर भी सहरिया जनजाति के लोगों का विकास तेजी से नहीं हो पा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व -

आज देश को आजाद हुए 75 साल हो गये हैं। भारत सरकार ने प्रत्येक नागरिक को शिक्षित रोजगार पदक बनाने के लिए अनेक आर्थिक समितियाँ बनायी है जिससे शिक्षा जनजन तक पहुँच रही है। प्रत्येक वर्ग लाभ प्राप्त कर रहा है और देश वर्तमान प्राप्त कर रहा है। परन्तु आज की सहरिया जनजाति के लोग शिक्षा के प्रति, रोजगार के प्रति जागरूक नहीं हैं। यही कारण है कि इस जनजाति का विकास नहीं हो पा रहा है। सहरिया जनजाति के लोगों तक शिक्षा स्वास्थ्य सेवाओं का पहुँचाना आज भी एक कठिन चुनौती है, क्योंकि सहरिया जनजाति एक आदिम जनजाति है। कुपोषण आज भी बेहद गम्भीर चुनौती है और सहरिया जनजाति इससे ग्रस्त हाल के वर्षों में सरकार ने गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर सहरिया जनजाति बहुल गांवों में शिक्षा कुपोषण निदान और स्वास्थ्य सम्बन्धी मसलों पर बेहतर कार्य करने का प्रयास किया है और यह प्रयास वर्तमान समय में भी निरन्तर जारी है। इसलिए शोधार्थी ने सहरिया जनजाति को शिक्षित करने व्यावसायिक (रोजगार) के प्रति जागरूक करने और समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाये जिससे सहरिया समाज सफल होगा।

सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण -

समस्या चयन के बाद मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कर्ता समस्या के गहन अध्ययन के लिये सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करता है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण में वह समस्या से सम्बन्धित शोध कार्य पुस्तके विभिन्न प्रकार के शोध पत्र, पत्रिकाएं का

अध्ययन करके अपनी शोध समस्या के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र करता है सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अनेक स्रोत है जिसमें समस्या से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है।

जैसे -

शोध पुस्तिके, शोध पत्र पत्रिकाएँ, मनोवैज्ञानिक रिव्यू, संदर्भ पुस्तकें, प्रकाशित प्रबन्ध, लघु पुस्तिकाएँ, कम्प्यूटर सामग्री, इन्टरनेट, समाचार पत्र आदि उक्त विश्लेषण के आधार पर यह जानना आवश्यक है।

1. भारद्वाज, एस.बी.एल. (1984)- उत्तर प्रदेश के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन किया गया और पाया कि -

☐ बालक और बालिकाओं ने उच्च स्तर पर पीढ़ीगत सामाजिक, वैज्ञानिक एवं विषय सम्बन्धी विषय में रुचि दिखाई तथा न्यूनतम स्तर पर यांत्रिक, व्यापारिक विषयों में रुचि दिखाई।

☐ बालक और बालिकाओं ने मध्यम स्तर पर बाहरी विषय में रुचि दिखाई।

2. सिंह, एल. श्री सिंह (1988)- सहरिया जनजाति के किशोर बच्चों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया गया और पाया कि-

☐ किशोरियों की शैक्षिक अभिरूचि, व्यावसायिक अभिरूचि अनुकूल नहीं थी। अध्ययन विषय पाठ्यक्रम एक दूसरे से आपस में सीधे नहीं जुड़े थे।

☐ साहित्य, वाणिज्य, सौन्दर्य, कृषि व्यवसाय की रुचि समान थी।

☐ बालकों में वैज्ञानिक, रचनात्मक विषय के पाठ्यक्रम एवं उनकी शैक्षिक रुचि महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थी।

3. रेड्डी, आर.के. (1993)- इन्होंने कक्षा 9 एवं 10 के आदिवासी बच्चों पर रोजगार एवं अभिरूचि भाव के विकास पर सामाजिक आर्थिक तथा शहरी ग्रामीण भिन्नता का अध्ययन किया और पाया कि-

☐ शहरी बच्चों के सन्दर्भ में व्यावसायिक चुनाव कराने वाले छात्रों के प्रतिशत में वृद्धि उनके स्तर तक थी।

☐ शहरी एवं उच्च सामाजिक आर्थिक समूह में वातावरण वास्तविकता पायी गयी।

☐ मध्य सामाजिक, निम्न सामाजिक समूह व्यवसाय के सम्बन्ध में अधिक जानकारी रखता है।

4. भटनागर, एच. (1997)- इन्होंने किशोरियों के व्यवसाय चुनाव एवं उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया और पाया कि-

☐ किशोरियों के व्यवसाय पसन्द भिन्न-भिन्न थे।

☐ इन किशोरियों में मात्र 10 प्रतिशत ही नौकरी में रुचि रखती है।

☐ शहरी और ग्रामीण किशोरियों में व्यवसाय रुचि एवं रोजगार में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।

5. जावेद, अब्दुल कुरैशी (1999)- ग्रामीण स्तर के माध्यमिक कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों की व्यावसायिक रुचि का अवलोकन किया गया और पाया कि-

☐ कला विज्ञान के छात्रों ने कृषि, शिक्षण कार्य को पसन्द किया।

☐ कला विज्ञान के छात्रों ने शारीरिक शिक्षा एवं अन्य व्यवसाय को कम पसन्द किया।

☐ सभी छात्रों ने सामाजिक व्यवसाय को न पसन्द किया।

6. **राकेश, सिंह (1998)-** इन्होंने माध्यमिक स्तर के सहरिया जनजाति के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक वरीयताओं का अध्ययन किया और निष्कर्ष पाया कि-

- ☐ छात्र और छात्राओं ने व्यापार को कम पसन्द किया।
- ☐ छात्रों ने न्याय प्रशासन क्षेत्र अधिक पसन्द किया।
- ☐ छात्रों ने घरेलू व्यवसाय को कम पसन्द किया गया।
- ☐ छात्राओं ने अध्यापन कार्य क्षेत्र को अधिक पसन्द किया।

7. **शर्मा, एस. (1994)-** इन्होंने आदिवासी क्षेत्र के बालक और बालिकाओं की व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन किया और पाया कि-

- ☐ आदिवासी बालक और बालिकाओं की व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ☐ छात्र और छात्रा की परिवार सामाजिक, आर्थिक स्थिति का बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

8. **यादव, जे.एस. (1996)-** इन्होंने मुरैना क्षेत्र के सहरिया जनजाति के छात्र-छात्राओं की विभिन्न रुचियों का अध्ययन किया और पाया कि-

- ☐ मानविकी विज्ञान, कला, कृषि क्षेत्र में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ☐ गृहविज्ञान, फाइन आर्ट में अन्तर पाया गया।
- ☐ छात्राओं की कृषि, घरेलू कार्य में अधिक रुचि थी।

9. **डॉ० सिंह, प्रमिला (2017)-** प्रस्तुत शोध कार्य में रीवा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शहरी, ग्रामीण विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया और पाया कि-

- ☐ छात्र-छात्राओं की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ☐ शहरी संस्कृति, पृष्ठभूमि, आदिवासी बहुल्य क्षेत्र रहन-सहन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति व जागरूकता में अन्तर का परिणाम है।

समस्या कथन -

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि के सन्दर्भ में अध्ययन।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का क्रियात्मक परिभाषीकरण -

1. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी
2. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि

1. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

सहरिया जनजाति उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में पायी जाती है। सहरिया शब्द पारसी शब्द जिसका अर्थ है जंगल। इस जाति के लोग जंगल इलाके में रहते हैं। सहरिया जनजाति का क्षेत्र समस्त उत्तर प्रदेश में फैला है। यह जनजाति शिकार, संचयन से अपनी जीविका चलाते हैं परन्तु अधिकांश सहरिया जनजाति मजदूरी, लोहापीट और अन्य कार्यों के द्वारा जीवनयापन करते हैं। इस जनजाति में लोग मांस, मदिरा, मादक पदार्थ आदि का सेवन करते हैं। सहरिया जनजाति को उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है। इस जनजाति में कम मात्रा में छात्र-छात्राये शिक्षा प्राप्त करते हैं और सरकार इस जनजाति के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए अनेक योजनाएं चला रही है जिससे यह जनजाति विकास करके समाज की मुख्य धारा से जुड़ सके और अपने समाज का विकास कर सके। सहरिया जनजाति के मेधावी छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए सरकार अनेक प्रकार की योजनाएं छात्रवृत्तियाँ सरकारी सहायता प्रदान कर रही है।

2. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि

1- प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि, योग्यता, क्षमता के अनुसार किसी न किसी व्यवसाय का चयन करता है। कोई किसान, वकील, डॉक्टर या टीचर बनना चाहता है। किसी विशेष व्यवसाय के प्रति व्यक्ति की रुचि को व्यावसायिक अभिरूचि कहते हैं।

2- व्यावसायिक अभिरूचि का अर्थ- किसी व्यक्ति की जिस कार्य में करने या अपनाने को व्यावसायिक अभिरूचि कहते हैं। व्यावसायिक अभिरूचि में व्यक्ति की पसन्द और कार्य करने की क्षमता शामिल है।

3- व्यावसायिक अभिरूचि की परिभाषा-

व्यावसायिक अभिरूचि वह मानसिक प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को किसी विशेष प्रकार के कार्य या व्यवसाय की ओर आकर्षित करती है और उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करती है।

4- व्यावसायिक अभिरूचि की विशेषताएं

- 1. व्यक्तिगत भिन्नता-** प्रत्येक व्यक्ति की अभिरूचि अलग-अलग होती है। किसी को कला पसन्द है तो किसी को विज्ञान या तकनीकी कार्य।
- 2. अनुभव पर आधारित-** व्यक्ति के अनुभव, शिक्षा और वातावरण का उसकी व्यावसायिक अभिरूचि पर प्रभाव पड़ता है।
- 3. प्रेरणा का स्रोत-** व्यक्ति को कार्य करने के लिए मेहनत के साथ नई-नई चीजें सीखने के लिए प्रेरित करती है।
- 4. भविष्य निर्माण में सहायक-** व्यावसायिक अभिरूचि व्यक्ति को अपने भविष्य के लिए सही कार्य क्षेत्र चुनने में सहायता प्रदान करती है।

5- व्यावसायिक अभिरूचि के प्रकार

1. तकनीकी अभिरूचि- जिन व्यक्तियों को मशीन, उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक्स और तकनीकी कार्यों में रुचि होती है, उनके कार्य क्षेत्र में तकनीकी अभिरूचि पायी जाती है।

उदा०- इंजीनियर, इलेक्ट्रीशियन और मैकेनिक।

2. सामाजिक अभिरूचि- जिन व्यक्तियों को दूसरों की सहायता करना, लोगों से बातचीत करना और समाज की सेवा करना पसन्द होता है। उनमें सामाजिक अभिरूचि होती है।

उदा०- शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और परमर्शदाता।

3. वैज्ञानिक अभिरूचि- जिन व्यक्तियों को प्रयोग करना, नई जानकारी प्राप्त करना और समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक तरीके से खोजना अच्छा लगता है। उनमें वैज्ञानिक अभिरूचि होती है।

उदा०- वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्ता।

4. कलात्मक अभिरूचि- जिन व्यक्तियों को चित्रकारी, संगीत, नृत्य, अभिनय और रचनात्मक कार्यों में रुचि होती है उनमें कलात्मक अभिरूचि पायी जाती है।

उदा०- चित्रकार, कलाकार और संगीतकार।

विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन

विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है। किशोरावस्था में विद्यार्थी अपने भविष्य के व्यवसाय पर विचार करता है और उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। शिक्षक विद्यार्थियों की रुचियों को जानकर विषयों, पाठ्यक्रम और व्यावसायिक प्रशिक्षण के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इन विधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि को समझा जा सकता है और छात्र के व्यवसाय में चयन, योग्यता, कौशल को अवसर देना चाहिए। इसलिए विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि को पहचानना और उसका विकास करना शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य -

1. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना-

1. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन के चर -

1. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थी।
2. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि।

अध्ययन के उपकरण -

1. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि मापन हेतु उपकरण: S.P. Kulshrestha, Vocational Interest Record.
2. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि मापन हेतु उपकरण: D.N. Shrivastav or Prof. Vanshal, Vocational Interest Record.

शोध विधि -

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि -

प्रस्तुत शोध कार्य में ऑकड़ों की प्रकृति के आधार पर टी-टेस्ट विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध कार्य में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों को शामिल किया जायेगा। शोध कार्य में 300 छात्र और 300 छात्राये न्यादर्श के रूप में शामिल किये जायेंगे।

प्रदत्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या -

Gender	N	Mean	r	df	Significant Label 0.05	P. Value	Result
Boys	300	150.88	0.0471	598	0.05	0.4163	Null Reject
Girls	300	149.69					

व्याख्या -

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजाति माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचियों के बीच सम्बन्ध का परीक्षण सहसम्बन्ध गुणांक के माध्यम से किया गया। विश्लेषण से प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक (r) = 0.0471 पाया गया, जो अत्यन्त कमजोर सकारात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।

ग्रुप (X) के छात्रों का औसत स्कोर 150.8833 तथा ग्रुप (Y) छात्राओं का औसत स्कोर 149.6933 प्राप्त हुआ, जो दोनों समूहों के बीच बहुत कम अन्तर दर्शाता है। (r) = 0.0471 का मान अत्यधिक नगण्य है जिसका अर्थ है कि छात्र और छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचियों के बीच लगभग कोई अर्थपूर्ण सम्बन्ध नहीं है। चूंकि सहसम्बन्ध गुणांक बहुत कम है इसलिए यह सम्बन्ध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं माना जा सकता। अतः शून्य परिकल्पना (H_0) को अस्वीकार नहीं किया जा सकता और वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) अस्वीकार कर दिया जाता है।

निष्कर्ष -

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजाति माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचियों के बीच सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक नहीं पाया गया। दोनों समूहों की व्यावसायिक अभिरूचियां लगभग स्वतंत्र हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि सहरिया जनजाति के छात्र और छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि एक-दूसरे से सम्बन्धित नहीं है। वे अपनी रूचियों का चयन अलग-अलग तरीके से करते हैं। इसकी बजह विभिन्न सामाजिक अपेक्षाएं लैंगिक भूमिकाएं परिवारिक प्रभाव उपलब्ध कैरियर विकल्प की जानकारी और रुझान हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. **भारद्वाज, एस.बी.एल. (1984)-** आकूपेशनल इन्ट्रेस्ट पैटर्न ऑफ प्रासपेक्टिव टीचर ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल इन उ.प्र., पी-एच.डी. साइकोलॉजी लखनऊ यूनिवर्सिटी।
2. **सिंह, एल. श्री सिंह (1988)-** पैटर्न ऑफ एजुकेशन एण्ड वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ एडालसेंटस पी-एच.डी. साइकोलॉजी आगरा यूनिवर्सिटी।
3. **रेड्डी, आर.के. (1993)-** डेवलपमेंट ऑफ वोकेशनल एमंग एडालसेंस रूरल एण्ड अरवन स्टूडेंट्स, पी-एच.डी. एजुकेशन, आसाम यूनिवर्सिटी।
4. **भटनागर, एच. (1997)-** ए स्टडी ऑफ आकूपेशनल च्वाइस ऑफ एडालसेंस गर्ल्स फीटर्स इन्स्युलिंग, पी-एच.डी. एजुकेशन, मेरठ यूनिवर्सिटी।
5. **जावेद, अब्दुल कुरैशी (1999)-** ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ द स्टूडेंट ऑफ द डेल्टा स्टेज एण्ड इट्स इम्प्लीकेशन फॉर द फ्यूचर करीकुला, पी-एच.डी. एजुकेशन, लखनऊ यूनिवर्सिटी।
6. **राकेश, सिंह (1998)-** ए स्टडी ऑफ एजुकेशनल व्वाइसेज एण्ड वोकेशनल प्रिजरेन्सेज ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू इनवायरमेंट प्रोसेस वैरिएबल पी-एच.डी. एजुकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।
7. **शर्मा, एस. (1994)-** फैमिली एण्ड पी.ग्रुप इन्फ्लूयेन्स ऑमाद वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ गिफ्टेड एडालसेन्स स्टडिंग इन डिफरेंस टाइम्स ऑफ स्कूल, पी-एच.डी. एजुकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।
8. **यादव, जे.एस. (1996)-** अजमेर जिले के कक्षा 10 के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों तथा अन्य क्रियाओं के सन्दर्भ में अध्ययन।
9. **अन्य स्रोत- www.google.com**



Contributor Details:

शोध निर्देशक: प्रो० शैलजा गुप्ता

शोधार्थी: अनिल कुमार